ॐ

Date..................

प्रथमोऽध्याय:

एक समय में नैमिषारण्य तीर्थ में शौनक आदि 88000 ऋषियों ने सूत जी से पूछा कि- ऐसा कौन सा व्रत अथवा तप है जिसे करने से सभी लोग वांछित फल प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा व्रत अथवा तप हमें बताईजिये।

तब सूतजी महाराज कहते हैं कि- एक समय में इसी प्रकार नारद जीने भगवान विष्णु से पूछा था।

सूत जी महाराज कहते हैं कि- एकबार नारद जी अनेक लोकों में विचरण करते हुए इस मृत्युलोक में पहुंचे। मृत्यु लोक पहुंच कर नारद जी ने देखा कि मनुष्य अपने ही कर्मों के कारण, अपने ही असत्कर्मों के कारण अनेक तरह के दुःख भोग रहे हैं।

यहाँ बताया गया है कि - प्राणि अपने ही कर्मों का फल शुभ अथवा अशुभ फल को भोगता है। शुभ कर्म का फल है स्वर्ग, और अशुभ कर्म का फल है नरक। फिर मनुष्य योनि प्राप्त होने पर सुकर्मा अनेक तरह का सुख - सम्पत्तियों को भोगते हुए जीवन यापन करते हैं तो असत्कर्मा लोग अनेक तरह का दुःख कष्ट झेलते हुए जीवन यापन करते हैं।

Date........................

इस लिये प्राणी अपने कर्मों के ही कारण दुःखी होते है। इसलिये नारद जी ने कहा है कि प्राणी अपने ही कर्मों के कारण दुःखी होते है।

जैसे - भगवान श्रीरामचन्द्र जी वनवास जाने के बाद राजा दशरथ जल बिहिन मछली की तरह छटपटा रहे थे। और कौशल्या जी राजा दशरथ धैर्य दिलाने का प्रयास कर रही थी।

तब सुमन्त जी ने विचार किया कि भगवान श्री रामचन्द्र जी वन जाने का दुःख हम सभी को है। मुझे भी है, कौशल्या जी को भी है। राजा दशरथ को भी है। पर राजा दशरथ को सब से ज्यादा दुःख क्यों भोगना पड़ रहा है। इस तरह का विचार आया।

जब राजा दशरथ को होश आया तब राजा दशरथ स्वयं कौशल्या जी को बताते है कि मेरे द्वारा अज्ञानता के कारण श्रवण कुमार का वध हुआ। और श्रवण कुमार की कथा हम सभी जानते है। ~~सबा~~ जब श्रवण कुमार जल भर रहे थे तब द राजा दशरथ हिरन समझ कर शब्दभेदी बाण चला दिया था। उसी से श्रवण कुमार का मृत्यु हुआ। और श्रवण कुमार के माता-पिता ने शाप दिया कि - जैसे हम अपने पुत्र वियोग में अपने शरीर को त्याग रहे है उसी तरह आप को भी अपने पुत्र के

Date.........................

वियोग में शरीर त्यागना पड़ेगा। इसलिए राजा दशरथ को सब से ज्यादा दुःख हो रहा है।

वैसे तो सभी को दुःख हो रहा है, राम वन जाने का, पर राजा दशरथ को सब से अधिक दुःख हो रहा है। इसलिए प्राणी अपने कर्मों के कारण ही दुःखी होते हैं और दुःख भोगते हैं।

नारद जी ने प्राणीयों को दुःखी देखा और मन में विचार किया कि प्राणियों का दुःख किस प्रकार दूर हो, इस प्रकार विचार करते हुए नारद जी भगवान विष्णु के धाम, वैकुण्ठ लोक को चले गये।

और भगवान विष्णु को नमस्कार को किया स्तुती किया और कहते हैं कि- मृत्यु लोक के निवासी ~~प्राणी~~ मनुष्य अपने ही पाप कर्मों के कारण बहुत दुःखी हो रहे हैं। उन सब का दुःख कैसे नाश होगा। यह बता दीजिए।

तब भगवान विष्णु कहते हैं कि- जब मनुष्य अपने कर्तव्य से विमुख हो जाता है, निर्धारित किया हुआ सत्य मार्ग से विचलित हो जाता है, तभी ऐसी स्थिति पैदा होती है। और इस स्थिति से उबरने के लिये व्रत पूर्वक, निर्धारीत अनुशासनों का, नियमों का पालन करना चाहिये।

हे नारद! सत्य नारायण व्रत एक ऐसा व्रत है

Date..................

जिसे विधि-विधान के साथ करने पर जीवन में सुख की प्राप्ति होती है और मृत्यु के पश्चात् सद्गती मिलती है।

संसार में लोग सत्य धर्म की उपेक्षा कर देते है और सत्य धर्म की उपेक्षा करने के कारण ही प्राणि अत्यधिक कष्ट पा रहे है।

भगवान कहते है कि - सत्य ही भगवान का सच्चा स्वरूप है। जो व्यक्ति ऐसा समझ कर सत्यव्रत को अपनाता है उसे भगवान की कृपा का लाभ जरूर प्राप्त होता है।

भीष्म पितामह शर-शैय्या पर लेटे थे शकुनि उनके पास गये और बोले कि - आपने शत्रु पक्ष को अपनी दुर्बलता बताकर स्वयं भी कष्ट पाया तथा हमारी भी हानि की। ऐसा करना आपके लिये उचित नही था।

भीष्म पितामह ने कहा कि - शकुनि मैं कौरवों का अन्न खाता था और कौरवों के अन्न से मेरा शरीर का पालन-पोषण होता था इसलिए केवल शरीर से मैं तुम लोगों के पक्ष मे था।

और मेरा मन जो है भगवान की कृपा से पलता है। इसलिए मैं उसी पक्ष मे हूं जिस पक्ष में भगवान श्रीकृष्ण है।

Date..........................

तब शकुनि कहता है कि - क्या आप भी उस ग्वालिये कृष्ण को भगवान मानते हो? ईश्वर मानते हो क्या?

पर भीष्म पितामह कहते है कि मैं श्रीकृष्ण को ईश्वर मानू या न मानू ये दूसरी बात है, पर सत्य पाण्डवों के पक्ष में है। और मैंने जीवन भर सत्य धर्म को ही ईश्वर मान कर उपासना किया है। सत्य धर्म ही मेरा ईश्वर है। इसतरह से कहा।

इसलिए ~~प्राणी~~ तभी भगवान विष्णु कहते है कि - हे नारद प्राणी तभी दुःखी होते है जब लोग सत्य धर्म को त्याग देते है।

यदि प्राणी कहने भर के लिये ही नही आचरण से भी सत्य धर्म का पालन करे तो निश्चित रूप से दुःखों से छुटकारा पा सकता है।

इसलिए प्राणी को चाहिये कि वह व्रत पूर्व सहित सत्यधर्म का पालन करे।

इस प्रकार व्रत का (स.स धर्म) आचरण करने से निश्चय ही मनुष्यों की इच्छा पूर्ण होती है।

तब नारद जी कहते है कि - भगवन् उस व्रत का क्या फल है, उस व्रत का क्या विधि विधान है, उस व्रत को किसने किया है, वह व्रत किस दिन करना चाहिए, यह सभी भी बता दिजीये।

Date.........................

भगवान कहते है कि- जिस दिन मनुष्य भक्ति और श्रद्धा से युक्त हो उसी दिन (सन्ध्या) के समय सत्यनारायण भगवान की पूजा को करे, भगवान को नैवेद्य प्रसाद अर्पण करे। प्रसाद, फल, फूल अर्पण करे। भगवान को भोग लगाये। अपने बन्धु बान्धवों के साथ भगवान की कथा को सुने। भगवान का प्रसाद को ग्रहण करे। कीर्तन इत्यादि करे, ब्राह्मणों को भोजन कराये। इस तरह भगवान सत्यनारायण की व्रत को करे। और जो व्यक्ति इस तरह का आचरण को करता है वह निश्चय ही उस मनुष्य की सारी इच्छाये पूर्ण होती है।

— " — " — " — "

द्वितीय अध्याय।

सूत जी कहते हैं कि- हे ब्राह्मणों - जिसने इस व्रत को किया था, उन सत्यव्रत धारण करने वालों की कथा मैं सुनाता हूं।

काशीपुरी नामक नगर में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था। और वह ब्राह्मण भूख-प्यास से दुःखी होकर पृथ्वी पर डोला करता था।

जब भगवान ने उस ब्राह्मण को अति दुःखित देखा तो बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करके उसके पास आये और पूछे कि- हे ब्राह्मण! तुम इस तरह दुःखी होकर पृथ्वी पर क्यों फिरा करते हो क्या कारण है?

तब ब्राह्मण देवता ने कहा कि- मैं बड़ा दीन दरिद्र ब्राह्मण हूँ और भिक्षा के लिये इस पृथ्वी पर डोला करता हूँ। हे प्रभू! यदि आप इस दरिद्रता से छुटकारा पाने का कोई उपाय जानते हो तो कृपा करके मुझे बता दें।

भगवान कहते हैं कि- हे ब्राह्मण, आप अपने कर्तव्य मार्ग से विमुख हो गये हो, ब्राह्मण उचित सत मार्ग से भटक गये हो, असत मार्ग पर चल रहे हो और असत मार्ग पर चलने के कारण ही ~~तुम्हें ये कष्ट~~ तुम ये कष्ट पा रहे हो।

ब्राह्मण का कर्तव्य है।- यज्ञ करना और-

Date...................

यज्ञ कराना, अध्ययन करना और अध्यापन कराना दान लेना और दान देना ये ब्राह्मण का कर्तव्य कर्म है।

और ब्राह्मण का कार्य है - स्वयं अपना ज्ञान को बढ़ाना और समाज का ज्ञान बढ़ना। और अपना चरित्र को सुन्दर बनाना, समाज के लोगों के चरित्र को सुन्दर बनाना, श्रेष्ठ कार्यों के लिये सहयोग देना और दिलाना ये ब्राह्मण का कार्य होता है।

अज्ञान ही सभी दुःखों का कारण बनता है इसलिये यह उत्तरदायित्व ब्राह्मणों का है।

गुरु नानक सामान्य व्यापारी के पुत्र थे, और कबीर अनाथ थे। शिक्षित भी नहीं थे। और नाम देव छोटा सा व्यवसाय से जीवन चलाते थे पर इन लोगों ने ज्ञान का साधना किया, दूसरों को ज्ञान दिये। इसलिये श्रेष्ठ सन्त और पूजनीय बने।

और मनुष्य की श्रेष्ठता उसके आचरण से होता है। जानकारी होना अच्छी बात है, पर उसका आचरण न किया जाय तो वह ज्ञान भी निरर्थक हो जाता है।

रावण ऋषि वंश का था, विद्वान भी सामान्य नहीं बेजोड़ का विद्वान था, ब्राह्मण था, पर चरित्र निर्माण में चूक जाने के कारण ब्राह्मण होकर भी राक्षस कहलाया। और-

राजा बलि राक्षस वंश के थे। परन्तु शुक्राचार्य के सान्निध्य से अपना चरित्र को इतना श्रेष्ठ बना दिया था कि देवता भी लज्जित होने लगे। देवताओं की सहायता करने के लिये भगवान विष्णु भी राजा बली को अनिष्ट न कर सके और याचक बनकर वहाँ पहुँचे और राजा बली की चरित्र की श्रेष्ठता स्वीकार किया।

इसलिये ब्राह्मण का कार्य है अपना ज्ञान और समाज का ज्ञान को बढ़ाना, अपना चरित्र और समाज का चरित्र को बनाना, यह ब्राह्मण का कार्य है।

इसलिये भगवान विष्णु कहते हैं कि हे ब्राह्मण! आप अपने ब्राह्मण उचित सत् मार्ग से भटक गये हो, असत् मार्ग पर चल रहे हो। इसलिए आज से आप सत्य व्रत को अपनाना और सत्य मार्ग पर चलना। और उस व्रत का सम्पूर्ण विधि विधान को बतलाकर भगवान अन्तर्धान हो जाते हैं।

ब्राह्मण देवता ने सत्यव्रत करने का

मन में निश्चय किया और सुबह होते ही
भगवान सत्यदेव का व्रत करने का मन ही मन
संकल्प करके भिक्षा माँगने के लिये चल दिया
और उस दिन उस ब्राह्मण को आशातीत धन की
प्राप्ति हुई और उसी धन से अपने बन्धु-बान्धव
के साथ भगवान सत्यदेव का व्रत को किया और
उस व्रत की प्रभाव से समस्त दुःखों से छुटकारा
पाकर अनेक सम्पत्तियों वाला बन गया।

भगवान सत्यदेव की कृपा से और सत्मार्ग
पर चलने ~~धर्म को अपनाने~~ के कारण वह ब्राह्मण देवता
धन धान्य से सम्पन्न हुआ। ~~अन्तकाल~~ ~~और अन्त~~
~~समय में मोक्ष प्राप्त किया~~ और हर महिने
भगवान सत्यदेव का व्रत करने लगा। और
भगवान के बताये हुए मार्ग पर चलकर अन्त
समय में मोक्ष - वैकुण्ठ को प्राप्त किया।

सूतजी महाराज कहते है - हे ब्राह्मणों मैंने
यह व्रत की कथा को सुनाया। अब क्या वर्णन करूँ।

शौनक आदि ऋषि गण कहते है कि -
भगवन्! उस ब्राह्मण से सुनकर इस व्रत को
पृथ्वी पर किसने किया है, यह भी बता दिजीए।

सूतजी महाराज कहते है कि - एक दिन
वही ब्राह्मण, सदानन्द अपने धन - वैभव के अनुसार
अपने बन्धु - बान्धवों के साथ व्रत करने के लिये

Date.....................

तैयार हुआ कि - इतने में ही वहाँ पर एक लकड़हारा उपस्थित हुआ। लकड़ी के बोझ को बाहर रखकर ब्राह्मण के घर गया। भूख-प्यास से पीड़ित होने पर भी उसने भगवान की कथा को सुना और ब्राह्मण को प्रणाम करते हुए कहा कि- हे ब्राह्मण आप यह क्या करते हो, इसके करने से क्या फल मिलता है?

सदानन्द ने कहा कि- मैं भगवान सत्यदेव की पूजा को कर रहा हूँ, भगवान की ही कृपा से मेरे यहाँ धन धान्य की वृद्धि हुई है। और तुम अपने आप को हीन मत समझना। तुम्हारे पास तो श्रम की महान पूंजी है। और जो श्रम करता है उनके उपर भगवान की कृपा अपने आप हो जाता है।

एक व्यक्ति सन्त सुकरात के पास बार-बार गया और सम्पन्नता होने का आशीर्वाद मांगता, पर सन्त सुकरात बहलाकर उसे हर बार टाल देते थे।

एक बार सन्त ने देखा कि वो व्यक्ति फल बेचने के लिये जा रहा है। तो सन्त सुकरात स्वयं जाकर उसे सम्पन्नता का आशीर्वाद दिया। उस व्यक्ति ने कहा कि- मैं ने बार-बार आग्रह किया पर आपने मुझे कभी भी आशीर्वाद नहीं दिया। पर अब स्वयं देने के लिये क्यों आये हो?

Date...................

तब सन्त सुकरात ने कहा। कि- परिश्रम हीन व्यक्ति को दिया हुआ आशीर्वाद भी फलित नही होता। पर अब तुम श्रम करने लगे इसलिये मैं स्वयं आकर आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण सदानन्द कहता है कि- मैं भगवान सत्यदेव की पूजा को करता हूँ और भगवान के बताये हुए धर्म मार्ग पर चलता हूँ। सत्यव्रत को पालन करता हूँ।

जो व्यक्ति सत्य धर्म का पालन करते है उसके जीवन में सभी गुण आजाते है। धर्म रूपी वृषभ के चार चरण है (१) विवेक (२) संयम (३) सेवा और साहस। ये सारे गुण सत्यधर्म पालक व्यक्ति के जीवन में आजाते है।

धर्म जो है विवेक सम्मत ही होता है। विवेक पूर्वक निर्णय करके धर्म पालन करना चाहिये।

जैसे- माता-पिता की आज्ञा मानना, गुरु की आज्ञा मानना, पति की आज्ञा मानना यह धर्म संगत है।

पर प्रह्लाद का हिरण्यकश्यपु की बात न मानना, बिभीषण का अपने बड़े भाई रावण का बात न मानना भी धर्म संगत है।

इसलिए धर्म विवेक सम्मत ही होता है।

वह शक्ति प्राप्त किया जिसके द्वारा

Date............

(२) ~~छ~~ संयम

धर्म का एक चरण संयम भी है। संयमशील व्यक्ति ही धर्म का आचरण करने में स्थिर रह पाता है। ~~उस~~ असंयम होने ही पतन हो जाता है।

लक्ष्मण ने चौदह वर्ष तक व्रत किया और इस संयम के द्वारा ही मेघनाद को मार सका।

सभी ऋषि मुनी संयम द्वारा अपनी आवश्यकताओं को कम करते थे और आंतरिक शक्तियों को विकसित करके समाज का हित साधन करते थे। इसलिये संयमशील व्यक्ति का धर्म स्थिर रह पाता अन्यथा असंयम पतित कर देता है।

सेवा।

धर्म का आचरण में सेवा भी जरूरी है।

शबरी भीलनी थी। लोग उन्हे भजन - पूजन भी करने नही देते थे। तब शबरी ने उन तपस्वीयो, ब्रह्मचारीयों का सेवा कार्य मूक निष्ठा के साथ करना प्रारम्भ कर दिया। उन के मार्ग को साफ करना, ~~[illegible]~~ झाड़ू लगाना, सरोवर इत्यादि जहाँ ऋषि - मुनी स्नान करते थे उसे स्वच्छ रखना, गन्दा होने नही देना इत्यादि कार्य शबरी ने करना शुरु कर दिया। और उसका फल स्वरूप

Date..................

भगवान श्रीराम चन्द्रजी वहाँ पर पहुँचे और शबरी को सम्मान दिया। करने मे
इसलिये धर्मपालन, सेवा भी बहुत जरूरी होता है।

और साहस
धर्म का आचरण के लिये सत् साहस की भी बहुत जरूरी होता है, नहीं तो व्यक्ति समर्थ होते हुए भी श्रेष्ठ मार्ग पर आगे नहीं बढ़ पायेगा।
जैसे- जटायु ने देखा कि रावण माता सीता को अपहरण करके जा रहा है। जब कोई गलत कार्य करता है तो उसे तुरन्त रोकना चाहिये। नहीं तो उसका हौंसला और भी बढ़ जाता है। जटायु ने तुरन्त रावण को चुनौती देते हुए रोका और बड़ा भयङ्कर युद्ध किया।
इसलिये धर्म आचरण में सत् साहस का भी बहुत जरूरी होता है।
परन्तु जो व्यक्ति सत्य धर्म को अपनाता है उसके जीवन में ये सभी गुण आ जाते है।
सदानन्द ब्राह्मण ने कहा कि - मैं भगवान सत्यदेव की पूजा को करता हूँ, और भगवान का बताया हुआ सत्यमार्ग पर चलता हूँ।
लकड़हारा ने मन ही मन विचार किया कि आज लकड़ी बेचने से जो भी धन प्राप्त होगा उसी से

Date.......................

में भगवान सत्यदेव की पूजा को करूंगा। और उस दिन लकड़हारा को काठ का दूना मूल्य प्राप्त हुआ। और उसी धन से भगवान् सत्यदेव का व्रत को किया। और भगवान की कृपा से और उस व्रत की प्रभाव से लकड़हारा धन धान्य से सम्पन्न हुआ और इस लोक में सुख भोग कर अन्त समय में सत्यलोक को प्राप्त किया।

भगवान नारायण सत्य स्वरूप है जो व्यक्ति भगवान नारायण के प्रति आस्था रखता है और निष्ठा पूर्वक भगवान नारायण की भक्ति करता है और भगवान नारायण की बताये हुए मार्ग पर चलता है उसके उपर भगवान नारायण की विशेष कृपा होती है वह व्यक्ति कृपा का अधिकारी बन जाता है।

—"—"—।

तृतीय अध्याय:

Date..........................

सूतजी कहते हैं कि- हे मुनियों! प्राचीन समय में उल्कामुख नाम का एक सत्यवादी राजा था। उस राजा की पत्नि बड़ी पतिव्रता थी। एक दिन दोनों भद्रशीला नदी के तट पर (भ.स.दे.की) व्रत कर रहे थे। इतने में ही वहाँ पर एक व्यापारी आ पहुंचा। वह व्यापारी अपने जहाज को नदी के तट पर ठहराकर राजा के पास आया। और पूछा- कि- हे राजन! आप इतने श्रद्धा और भक्ति के साथ किसकी पूजा को कर रहे हो?

राजा ने कहा कि- मैं पुत्र की इच्छा से भगवान सत्यदेव की पूजा को कर रहा हूँ। पुत्र प्राप्ति के लिये भगवान सत्यनारायण की पूजा को कर रहा हूँ।

वैश्य ने कहा कि- हे राजन, आप मुझे व्रत का सारा वृत्तान्त बताइये, मैं भी करूंगा। क्योंकि मेरा भी कोई सन्तान नही है, आप मुझे बताइयेगा।

इस तरह वह वैश्य राजा से सारा विधि-विधान जान कर बड़े प्रसन्नता के साथ अपने घर को लौट आया। घर पहुँच कर अपने पत्नि लीलावती को व्रत का सारा माहात्म्य कह कर सुनाया। और लीलावती भी बड़े श्रद्धा-भक्ति के साथ सत्यधर्म का पालन करने लगी।

पत्नि को चाहिये कि वह अपने पति की अच्छे कार्यों में श्रद्धा के साथ सहयोग करे। प्रसन्नता पूर्वक सहयोग करे।

Date..................

भगवान श्री रामचन्द्र जी वन जाने के लिये जब तैयार हुये तो सीता जी भी जाने के लिये तैयार हो गई। सीता जी ने भगवान राम का साथ दिया। सीता जी ने सारा सुख त्यागकर वन में संकटों को प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया।

अत्रि ऋषि चित्रकूट में तप और साधना लगे हुये थे। वहां पर पानी की कमी पड़ जाया करती थी। तब उसकी पत्नि, जिसका नाम अनुसूया था उसने घोर तप करके गंगा जी को प्रसन्न कर लिया और मां मंदाकिनी की धारा वहां बह चली। इसतरह अनुसूया ने अपने पति के कार्य में सहयोग दिया।

इसलिये पत्नि को चाहिये कि वह अपने पति के अच्छे कार्यों में सहयोग दे।

सेठ और उसकी पत्नि दोनों सत्य धर्म का पालन करने लगे। उन दोनों ने अपने आय का एक अंश सत् कार्यों में नियमितरूप से लगाने का निश्चय किया।

यहां पर बताया गया है कि मनुष्य की बुद्धिमानी की परिक्षा धन कमाने में नहीं है। मनुष्य की बुद्धिमानी धन का सद् उपयोग करने में है।

Date........................

जब विश्वामित्र को आवश्यकता पड़ी तब राजा हरिश्चन्द्र ने अपना सारा राज्य विश्वामित्र को दे दिया। देशहित में महाराणा प्रताप की आवश्यकता पूरी करने के लिये भामाशाह ने घर की एक-एक पाई उन्हें सौंप दिया।

गौतम बुद्ध भगवान का संदेश समाज तक पहुँचाने के लिये सम्राट अशोक, और हर्षवर्धन और राजा हर्षवर्धन ने सारे राज्य की सम्पत्ति लगा दिया।

इसलिये मनुष्य की बुद्धिमानी की परिक्षा धन का सत् उपयोग करने में है।

इस तरह से सेठ और उसकी पत्नि लीलावती दोनों सत्य धर्म का पालन करने लगी। और भगवान सत्यदेव की कृपा से लीलावती गर्भवती हुई और उसके महिने में एक कन्या रत्न का जन्म हुआ, जिसका नाम रखा गया कलावती। जब पुत्री का जन्म हुआ तब लीलावती अपने पति से कहती है कि- हे स्वामी! पहले हमलोगों ने जिस व्रत को करने का संकल्प लिया था उस व्रत को कर लेते हैं। तब.

वैश्य ने कहा कि- जब कन्या का विवाह का समय आयेगा उस समय किया जायेगा। इस तरह से अपनी पत्नि को किसी तरह समझा-

Date.............

समझा कर व्यापार करने के लिये चला गया।
जैसे पत्नि का कर्तव्य होता है कि - पति के अच्छे कार्यों में सहयोग देना। उसी तरह पत्नि का यह भी कर्तव्य होता है कि पति से जब अनुचित कार्य होने लगे अथवा पति अनुचित कार्य करने लगे तो उसे रोकना ये भी पत्नि का कर्तव्य होता है।
जैसे रावण बड़ा क्रोधी था दुष्ट था। पर रावण की पत्नि, जिसका नाम था मन्दोदरी उसने रावण हर अनुचित करम को रोका, सावधान किया। इसलिये रावण की जब मृत्यु हो गई तब भगवान श्रीरामचन्द्र जी ने स्वयं मन्दोदरी मान-सम्मान किया।
यहाँ पर वैश्य अपने पत्नि को समझा बुझा कर व्यापार करने के लिये चला जाता है। और इधर कलावती धीरे-धीरे बढ़ने लगी और आखिर विवाह के योग्य हो जाती है। कलावती के विवाह के लिये, वर ढूढने के लिये अनेक दूतों को अनेक शहरों में भेजा गया। एक दूत कांचनपुर नामक नगर में पहुँचाता है। वहाँ पर एक उत्तम बनिये के पुत्र को देखता है, और उसी के साथ कलावती का विवाह होता है।
परन्तु भाग्यवशात् उस समय भी व्रत करना

भूल गये।

सेठ ने कहा था कि कन्या के विवाह के समय भगवान का पूजा किया जायेगा। पर, वैश्य जो है सत्यधर्म से ~~मुकर~~ चूक गये। जब व्यक्ति अपने धर्म को त्याग देता है तब भगवान ~~रुष्ट~~ कष्ट हो जाते हैं, क्रोधित हो जाते हैं और भगवान के क्रोध ~~के कारण~~ से मनुष्य अनेक तरह के दुःख में फंस जाता है।

वैश्य जो है अपने दामाद के साथ व्यापार करने के लिये चला जाता है और राजा चन्द्रकेतु के नगर में व्यापार करने लग जाता है।

भगवान ने जब वैश्य की झूठी प्रतिज्ञा को देखा, असत्य वचन को देखा तो श्राप दिया कि तुम्हें महा दुःख और महाकष्ट प्राप्त होगा।

भगवान ने अपनी माया को प्रेरित किया, माया का चोर आया और राजा का धन लेकर जहाँ पर सेठ और दामाद ठहरे हुये थे वहीं पर सारा धन रख कर अदृश्य हो गया। पीछे से सीपाही आते हैं और राजा का धन देख कर सेठ और दामाद दोनों को बन्दी बना कर लेकर जाते हैं। और राजा ने आज्ञा दिया कि इन दोनों को जेल में डाल दिया जाये। भगवान के माया के कारण किसी ने भी उन दोनों का कहना नहीं सुना। किसी बात पर ध्यान नहीं दिया। और जो धन था

Date..........................

सारा धन राजा ने ले लिया।

पत्नि का कर्तव्य होता है कि पति को धर्म के मार्ग पर लाये। धर्म पालन करवाये। लीलावती भी पति से धर्म पालन कराने के अपने कर्तव्य को पूरा नहीं किया। इसलिये लीलावती भी भगवान के क्रोध का भाजन बनी।

घर में चोर घुस आया, सारा धन चुरा कर ले गया। शारीरिक और मानसिक रोग सताने लगा। आखिर भूख-प्यास से पीड़ीत होकर माँ-बेटी घर-घर भिक्षा माँगने के लिये फिरने लगी।

एक दिन कलावती भूख-प्यास से पीड़ित होकर एक ब्राह्मण के घर गई। वहाँ पर भगवान सत्यदेव की पूजा को देखा, कथा सुनी, भगवान का प्रसाद पाया और वरदान माँगी; फिर कथा पूरा होने पर रात को अपने घर वापस आई।

घर पहुँचने पर लीलावती अपने पुत्री से कहती है कि- इतने रात तक तू कहा पर थी, क्या कर रही थी। कलावती ने सारी बात कह कर बताया।

लीलावती कहती है कि- पुत्री उन्हीं भगवान के कृपा से तुम्हारा जन्म हुआ है, पर आज तक हम लोगों ने भगवान सत्यदेव का पूजन को नहीं किया

हम सभी से जो अपराध हुआ है उसे क्षमा कर दीजिएगा

~~इसतरह~~ फिर लीलावती अपने बन्धु-बान्धवों के साथ मिलकर भगवान सत्यदेव की पूजा को किया और वरदान मांगा कि हे भगवान, मेरे पति और दामाद दोनो शीघ्र घर वापस आ जाये, इसतरह से वरदान मांगा।

भगवान ने तुरन्त राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न दिखाया और कहा कि- कल सुबह होते ही दोनों वैश्य को तुरन्त छोड़ देना, जो कुछ धन लिया है सारा धन वापस कर देना, अन्यथा मैं तुम्हारा सारा राज्य को नष्ट कर दूंगा। इस तरह का भयानक स्वप्न को दिया और अन्तर्ध्यान हो गये।

सुबह होते ही राजा ने सेठ और दामाद दोनों को कारागृह से छोड़ दिया और जो कुछ धन लिया था उससे दुगुना धन वापस दिया। इसतरह से सेठ और दामाद दोनो अपने घर की ओर प्रस्थान करते है।

—— ॥ —— ॥ ——

चतुर्थ अध्याय।

सूत जी बोलते हैं कि- वैश्य ने मांगलिक कार्यों को करके ~~यात्रा आरम्भ~~ के अपने नगर की ओर प्रस्थान किया। कुछ दूर पहुँचने पर भगवान् ने विचार किया कि इसकी परीक्षा लेनी चाहिये। क्योंकि व्यक्ति के पास जब धन होता है तो वह अहंकारी बन जाता है। ~~और~~ इसकी सत्यनिष्ठा की परीक्षा लेनी चाहिये। ऐसा सोचकर भगवान ने दण्डी स्वामी का रूप धारण किया और सेठ से पूछा कि- आपके नाव में क्या भरा हुआ है।

सेठ हंसने लगा और कहने लगा कि- आप क्यों पूछते हो, क्या आप को धन रुपया चाहिये, पर जहाज में कुछ भी नही है। केवल लता पत्र आदि से भरा हुआ है। सेठ जो है फिर से सत्य धर्म से गिर गया और भगवान ने कहा कि तुम्हारा वचन सत्य हो, ऐसा कहकर वहाँ से कुछ दूर समुद्र के तट पर जाकर ठहर गये।

दण्डी स्वामी के चले जाने के बाद सेठ ने जब अपने जहाज पर जाकर देखा तो सारा जहाज जो है लता पत्र आदि से भरा हुआ है। वैश्य मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ा, जब होश आया तो चिन्ता करने लगा। रोने लगा।

दामाद ने कहा कि- आप को दण्डी स्वामी ने श्राप दिया है। अभी भी कुछ बिगड़ा नही है। हम सभी

दण्डी स्वामी के पास जाते है क्षमा मांगते है। तब फिर हमारा मनोरथ सिद्ध हो सकता है।

दोनों दण्डी स्वामी के पास आते है। श्रद्धा-भक्ति के साथ प्रणाम करते है और क्षमा मांगते है कि मैं ने जो असत्य कहा था उसे क्षमा कर दिजिए। और शोक से व्याकुल होकर रोने लगे।

दण्डी स्वामी कहते है कि- तुम भगवान सत्यदेव की पूजा से बहिर्मुख हो गये है। और सत्य मार्ग पर चलना छोड़ देते हो, इसलिये बार-बार तुम्हे दुःख प्राप्त हो रहा है।

वैश्य कहता है कि आप मुझे क्षमा कर दीजिए मैं सदा भगवान सत्यदेव की पूजन करूंगा। मुझ शरणागत की रक्षा कीजिये। भगवान वरदान देकर तत्काल अन्तर्धान हो जाते है।

वैश्य ने अपने जहाज को धन सम्पत्ति से परिपूर्ण देखा और अपने साथियों के साथ मिलकर यथाविधि पूजन को किया और अपने देश की ओर प्रस्थान किया। जब नगर के समीप पहुँचे तो अपने दूत को भेजा कि घर में जाकर कहना कि हम सब आ रहे है।

उस समय में लीलावती भगवान सत्यनारायण की पूजा कर रही थी। दूत की वचन को सुन कर लीलावती ने अपनी पुत्री से कहा कि- मैं अपने पति की दर्शन करने जा रही हूँ तुम भी जल्दी आना इसलिए

से कहकर चल पड़ी।

कलावती ने व्रत को समाप्त किया पर भगवान की प्रसाद को त्याग कर अपने पति की दर्शन करने के लिये चल पड़ी।

जब भगवान का अपमान हुआ, तब भगवान ने क्रोध होकर धान और पति के सहित जहाज को जल में डुबा दिया।

जब कलावती वहाँ पहुँचती है तो अपने पति को न देखकर रोदन करती हुई मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी।

वैश्य भयभीत होकर चिन्ता करने लगा। लीलावती व्याकुल होकर रोदन करने लगी।

जब कलावती को होश आया तो वह सती होने के लिये तैयारी करने लगी।

सेठ जमीन पर लेटकर भगवान को प्रणाम करने लगा और कहने लगा हे भगवान्, हमारे सारे अपराधों को क्षमा कर देना। आप प्रसन्न हो जाइये। मेरी समझ में कुछ नहीं आरहा है कि क्या हो रहा है। इस तरह से क्षमा माँगने लगा।

तब आकाशवाणी होती है कि- तुम्हारी कन्या ने मेरा अपमान किया, प्रसाद का त्याग करके अपने पति को देखने के लिये चलि आई। इसलिये वापस जाकर, प्रसाद को ग्रहण करे तो सब ठीक हो सकता है। कलावती पुनः लौटकर आती है। प्रसाद को

ग्रहण करती है फिर जाती ~~जाकर देखती है~~ थी ~~फिर~~ पति सहित जहाज को देखती है। सभी परि बड़ी प्रसन्नता के साथ वापस घर को लौट कर आते है और हर पूर्णिमा और संक्रान्ती के दिन भगवान सत्यदेव की पूजा को करके इस लोक में सुख भोगकर अन्त समय में वैकुण्ठ धाम को प्राप्त किया।

जो सत्यसाधक अपने सम्पत्ति को भगवान की धरोहर मानता है और सत्कार्यों में खर्च करता है और सत्यमार्ग पर चलता है तो वह व्यक्ति भगवान ~~का~~ प्रेम का अधिकारी ~~बन~~ जाता है।

पञ्चमोऽध्यायः

Date........................

आगे सूत जी बोलते है कि- प्राचीन समय में तुङ्गध्वज नाम का एक राजा रहता था। उसने भी भगवान का प्रसाद त्यागकर दुःख पाया था। एक बार राजा वन में शिकार करने के लिये गया। और वहाँ पर राजा ने देखा कि एक बरगद पेड़ के नीचे गोपगण अपने बन्धु बान्धवों के साथ भगवान् सत्यनारायण की पूजन कर रहे हैं, सभी लोग सत्यव्रत धारण करनेवाले थे। धर्म अनुष्ठान में लगे हुये थे।

समाज में जो व्यक्ति बुद्धि-विद्या से सम्पन्न है धन-सम्पत्ति से सम्पन्न है। जिसके पास सत्ता है उसे चाहिये की श्रेष्ठ कार्यों में भाग ले और योग दान दे।

समुद्र पर पुल बांधना असम्भव सा लगता था। पर; रीछ-बानरों ने सामूहिक रूप से अपनी योग्यता और श्रम का उपयोग किया। और पुल देखते-देखते बन गया। और भगवान श्रीरामचन्द्र जी लंका पर चढ़ाई कर सके।

गोप गणों ने राजा के पास जाकर धर्म अनुष्ठान में भाग लेने और प्रसाद ग्रहण करने का अनुरोध किया। पर राजा ने अहंकार से न तो वहाँ पर गये और न भगवान को प्रणाम किया।

Date.................

राजा ने उन सबको नीच कुल में उत्पन्न हुआ समझकर, उनके साथ बोलने, बैठने में स्पर्श करने में भी अपना दोष समझा।

जब गोप लोगों ने प्रसाद आकर दिया तो उसे भी त्याग कर अपने महल चले गये। राजा ने भेद बुद्धि किया। अपने कर्तव्य की उपेक्षा किया। भगवान का अपमान किया, भगवान के भक्तों का अपमान किया।

भगवान श्रीरामचन्द्रजी असुरों का नाश करने के लिये जब अयोध्या से निकले तो उन्होंने केवट, निषादराज, कोल-भीलों, शबरी-भीलनी सभी के साथ समानता का व्यवहार किया और भाव नहीं रखे। इसलिये भगवान श्रीराम चन्द्र जी सबके प्रिय बने, सभी का सहयोग पाये और युद्ध में विजय हुये।

राजा के द्वारा सत् कर्तव्यों का अवहेलना हुआ। और भगवान के श्राप से राजा का राज्य, धन-सम्पत्ति, पुत्र सब कुछ नष्ट हो गया।

राजा ने महल पहुँचने पर देखा कि सभी राजकुमार मर चुके हैं।

तब राजा ने आत्म विश्लेषण किया, अपनी दुर्दशा का किसी को दोष न देकर आत्म समीक्षा किया, विचार किया कि तब

Date...........

राजा को पता चला कि- वह अहंकार से ग्रस्त था, कर्तव्य से विमुख हो गया था, और सत्यधर्म की उपेक्षा किया, इसलिये यह पतन हुआ है
रावण, कंस, दुर्योधन यदि ये सब आत्म समीक्षा करते तो आसानी से अपने गलतीयों को सुधार सकते थे और सुख-सौभाग्य पा सकते थे। पर इन लोगों ने कभी भी आत्म समीक्षा नही किया और भूल पर भूल करते गये, और आखिर नष्ट हो गये।
राजा ने आत्म समिक्षा किया तो उसे पता चला कि उसने सत्य धर्म का उपेक्षा किया है। राजा को गोपगण याद आ गये। राजा ने पुनः वहाँ पर गया फिर से ग्वालों को इकट्ठा किया और बड़े श्रद्धा-भक्ति के साथ भगवान सत्य नारायण की पूजा को किया। और भगवान की कृपा से फिर धन और पुत्र से सम्पन्न हो गये। और इस लोक मे सुख भोग कर अन्त में वैकुण्ठ धाम को प्राप्त किया।
सूत जी महाराज कहते है कि- जो व्यक्ति भगवान सत्यनारायण की व्रत को करता है, भगवान की पवित्र कथा को सुनता है उसे धन, धान्य की प्राप्ति होती है। दरिद्रता नष्ट होजाता है। सांसारिक बंधनों से छुटकारा पाते है और भगवान की धाम वैकुण्ठ धाम को प्राप्त करते है।

Date..................

सूत जी महाराज कहते है कि - जिन लोगों ने भगवान सत्य देव की पूजा को किया था उन सबकी दूसरी जन्म की वृतान्त सुनाता हूँ' -

सदानन्द नामका जो ब्राह्मण था वह दूसरे जन्म मे सुदामा नाम का ब्राह्मण हुआ और भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करके मोक्ष को प्राप्त किया।

लकड़हारा दूसरे जन्म में राजा गुहराज हुआ और वि भगवान विष्णु का पूजा करके वैकुण्ठ धामको गया।

जो वैश्य था वह दूसरे जन्म मोरध्वज नामका राजा हुआ। अपनी पत्नि और पुत्र का आधा शरीर भगवान श्रीकृष्ण को दान देकर मोक्ष को प्राप्त हुआ।

जो तुङ्गध्वज नाम का राजा था वह दूसरे जन्म में स्वयम्भू मनु हुए और भगवान विष्णु की भक्ति करके वैकुण्ठ धाम को गये।

----- " ----- " " -----